संवत्सरफलदीपिका

जिसे

मालवान्तर्गत रत्नललाम-नगरनिवासी

श्रीकेवलरामात्मज व्यास हेतुराम

श्रीमालीने बनाया

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास प्रकाशन
कल्याण-बम्बई

भूमिका

पाठक महाशयो ! यह संवत्सरके योगायोगका ग्रंथ में पूज्यपाद पिताजीने अच्छे २ ग्रंथों और ज्योतिष विद्याके विद्वानोंकी संमति और सहायतासे हिंदीभाषाके जाननेवाले गुणग्राही और प्रेमी मनुष्योंके लाभार्थ बहुतही सरल रीतिकी कवितामें निर्माण किया था, और यह विचार प्रगट किया था कि, यह मुद्रित होकर जनसमुदाय में प्रसारण हो जावे. परंतु खेद है कि, परमेश्वरने यह इच्छा उनकी पूर्ण न होने देकर शीघ्रही अपनी ओर खींच लिया. तबसे यह ग्रंथ वैसाही रक्खा था परंतु आज पीछे श्रीकृष्णदासात्मज श्रीगंगाविष्णुजी महाशयके उत्साह दिलाने पर यह आप लोगों के दृष्टिगोचर करानेको उद्यत हुआ हूं यद्यपि इसमें कविता दोषयुक्त तथा पदलालित्यसे वञ्चित होगी परंतु विद्वज्जन महाशय इसे बंधुत्वभावसे शुद्ध करके केवल आशयकी ओरही ध्यान देंगे.

इस पुस्तक के लिखने में मेरे पिताको उनके शिष्य नाथूरामजी शिल्पकार तथा बनानेमें रतलामवासी ज्योतिषी सीतारामजीसे सहायता मिली है अतएव वे मेरे धन्यवादके पात्र हैं. विशेष धन्यवादके पात्र उक्त श्रीसेठसाहब हैं जिन्होंने मुझे पूर्ण आश्रय देकर मेरा हर्ष आगेको बढ़ाया है.

ईश्वरकृपासे यही ग्रंथके द्वारा पाठकोंको कुछ भी लाभ हो तो मैं अपने पिताजीके परिश्रमको सफल समझूंगा शम्.

सकल पाठकोंका प्रेमाभिलाषी—

व्यास हेतुरामात्मज मदनराज श्रीमाली

हिन्दी पाठशालाध्यापक सेंट्रल कालेज रतलाम.

संवत् २०४६ सन् १९८९

सूचीमूल्य ३ रुपये मात्र

© प्रकाशक :

मुद्रक व प्रकाशक–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
बम्बई–४०० ००४ के लिए
दे. स. शर्मा मैनेजर द्वारा
श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, खेतवाड़ी, बम्बई में मुद्रित,

श्रीगणेशाय नमः

अथ

संवत्सरफलदीपिका

मंगलाचरण—कवित्त

प्रथम नमाऊ शीश महाबली इष्टहूको मालिक ध्वजवीर मोपै सांची कृपा कीजियो। माता तव अंजनीको ध्याऊं अठ पेर हिये आपहिके चाकरकी अरजी सुण लीजियो ।। तात्काल योगायोग ग्रंथको अरंभ करुं शरन रहे ताको तू बुद्धी वर दीजियो। हेतूराम कहे मोको आसरो तिहारो जान औरको न जानूं चरन तेरेही पसीजियो ।।१।।

दोहा

प्रथम सिमरुं ध्वजवीरको, दीन्ही बुद्ध बताय ।।
उदय अस्त वर्णन करूं, भाषामांय बनाय ।।१।।
अतीचार अरु अस्तग्रह, वक्रे मारग जाण ।।
कहूं ग्रंथकी साखसों, पण्डित करो प्रमाण ।।२।।
ग्रहके योगायोग फल, नीच ऊंच जो होय ।।
सब फल इनके कहत हों, मास दिवसके जोय ।।३।।
मेषादिकको आदि ले, कहियों सब संक्रान्त ।।
न्यारे न्यारे फल सुनो, नहिं इनके उपरान्त ।।४।।
प्रथम मासही चैत्र है, या विध बारे मास ।।
सोले तिथी प्रमान कहुं, सातों वार खुलास ।।५।।

अथ वारविचार

दोहा—खा पांच जा मासमें, करे मुलकमें हान ।।
नृपातन पीडा होवसी, अनहीं मूंगो जान ।।१।।

पांचचंद्र पांच जा मासमें, चारों दिशा सुकाल ।।
राजा परजा सब सुखी, रहे नित्य खुश हाल ।।२।।
भौम पांच जिण मासमें, करै उदंगल जान ।।
युद्ध मचे कोइ खण्डमें, तेज वस्तु पहिचान ।।३।।
जब बुध आ जिण मासमें, पड़े पांच ही वार ।।
तब सब देश अनंदमें, सुखी रहे नर नार ।।४।।
होपंच गुरू होय मासमें, जाको कहुं नरिधार ।।
सुख संपत अरु लाभ है, पश्चिम दिशा सुकार ।।५।।
शुक्र पांच जिण मासमें, उत्पत होत विशेष ।।
घर घर मंगलाचार है, सुखी रहे सब देश ।।६।।
शनी पांच जिण मासमें, कूण इशाने काल ।।
अग्नीवारो होय घणों, कंपे शेश पताल ।।७।।

अथ ग्रहणवारविचार

दोहा–ग्रहण होय रविवार तो, की जिय संग्रह धान ।।
लोक दुखी राजा लड़े, दुख पावे सब मान ।।१।।
चंद्रग्रहण होय चंद्रको, वाकों कहों विचार ।।
तेल रु घृत मूंगा करे, यो याको है सुमार ।।२।।
सूर्यग्रहण हो भौमको, मूंगी धोरी वस्त ।।
रूपो रुई खांड घृत, अरु जुवार ओ जस्त ।।३।।
बुधको सूरज ग्रहण होय, याको फल यह जान ।।
वस्त्र सोपारी लौंग फल, अमलहिं मूंगो मान ।।४।।
सभी सांज गुरुवारको, चंद्र सूर्य हो ग्रहण ।।
लाल वस्तु गुड़ कसुब अरु, तेलहि मूंगो मेण ।।५।।
ग्रहण होय भृगुवारको, है सब वस्तु सुकाल ।।
उत्तम समयो जानियो, अधिकहिं निपजे माल ।।६।।

मध्यरात्रि उपरांत जो, शनिवार होय पर्व ।।
जुवार काली वस्त सो, तेज रहत हैं सर्व ।।७।।

अथ द्वादश मासोंके पर्वोंका विचार ।

दोहा

कार्तिक मृगसिर दोयमें, ग्रहण होय तो शुद्ध ।।
पौषमासमें जो होवे, अन्न मूंगो अरु युद्ध ।।१।।
ग्रहण होय जो माघमें, भाव रहे सम जान ।।
फागुन अन जादा होवे, सूंगो बहुतहि मान ।।२।।
चैत्रमासमें ग्रहण होय, छत्र भंगही होय ।।
मास वैशाखके ग्रहण सो, तेज तेल कण जोय ।।३।।
ज्येष्ठ मासमें ग्रहण होय, वर्षा होय अनंत ।।
धान्य सभी बिगड़े सही, अधिक होय चितचंत ।।४।।
ग्रहण होय आसाढ़में, प्रगट करत है रोग ।।
वृष्टी जादा होवसी, यों याको संजोग ।।५।।
श्रावणमें जो हो ग्रहण, किञ्चित भलो हे देख ।।
चौपद पीड़ा होवसी, यो याको है लेख ।।६।।
भाद्रपदहिको ग्रहण सो, साख सवाई होय ।।
आसोजांका ग्रहणसूं, सूंगो समयो जोय ।।७।।

अथ वारपरसे वृष्टिविचार

दोहा—ज्येष्ठ असाढ़हि मासमें, पहिली वृष्टी होय ।।
रवीवारको जानिये, निश्चय दुभिख होय ।।१।।
चन्द्रवारकी वृष्टितें, सब सुख देशन मांय ।।
भौमकितें वायू वहे, कयो शास्त्रते गाय ।।२।।
बुधवारे वर्षे घणो, होवे रोग अपार ।।
शुभ गुरुवारी वृष्टि है, सुख पावे नर नार ।।३।।

शुक्रवार वर्षे घणो, अधिकहि वृष्टी जब ।।
प्रथम शनिश्चर वृष्टि होय, नाश होत जल तब ।।४।।

सातों वारोंके फल

दोहा—सातवारके फल कहूं, सुनियो चित्त लगाय ।।
रवीवार जो वर्षसी, निश्चय मूंगो थाय ।।१।।
सोमवारकी वृष्टिपै, दृष्टी कीजो आप ।।
होसी सूंगो मुलकमें, प्रजा जाय सब धाप ।।२।।
मंगल वर्षे अग्नि भय, बुध वर्षे होय रोग ।।
बालकपीडा गुरुहिते, यो याको है जोग ।।३।।
शुक्रवार किय वृष्टि जो, कण प्रमाणकी होय ।।
सुकाल होसो मुलकमें, निर्भय जाओ सोय ।।४।।
शनीवारकी वृष्टितें, अल्प मेहकी आश ।।
रोग बड़े जल ना पड़े, देखहु चारी मास ।।५।।
वार प्रमाणे ग्रहण कहे, वार प्रमाणे मेह ।।
ध्वजवीर शरणे जाणियो, हेतुरामकी देह ।।६।।

अथ बारह संक्रान्तियोंके फलका विचार ।

सवैय्या—रविवारको मेष संक्रान्ति रहे अन्न तेज करे सो सुनावत है। सोमवारि रहै जाको योग सुनो धोरि वस्तुहि तेज भोगावत है ।। भौमवारि होवे कण तेज करे बुधवार सुकाल बतावत है। गुरु शुक्र 'रहे संक्रांति कहूं यह सूंगोहि मास चेतावत है ।।१।।

दोहा—शनीवार संक्रान्त होय, विघ्नाचार अनंत ।। अन्न तेज बहु होवसी, प्रजा दुःख देखंत ।।१।। सवैया —रविवारि वृषभ संक्रान्ति रहे अन तेज अग्निभय लागत हैं। चंद्रवारि सुकाल करे एक मासहि भौम-पीड़ प्रजामें जगावत हैं।। बुधवारी प्रजाहुकि बुद्धि बढ़े गुरु शुर्क्रहिते

दुख भागत हैं। शनिवारि होवे अतिदुःख करे इनके फल हेतु सुनावत हैं ।।२।। रविवारि मिथुन संक्रान्ति सुनो करे रोगप्रजा दुख आवत है। सोमवारि अती सुख होवत है भय मंगलहिं दिखलावत है ।। बुधवारि प्रजा सुखदायक है रसकस गुरु सूंगो बिकावत है। भृगवारि सुखी संक्रान्त कहूं शनिवार प्रजा दुख पावत है ।। ३।। रविवारको कर्क संक्रान्त रहे अनरस कस तेजअपार लहे। सोमवारि होवे तो सुकाल करे भौमवारहि गुड़को सुकाल कहे ।। बुधवारि रहे फल शुद्ध देवे गुरुवारि सुखी संसार रहे। शुक्रवारिको तो फल श्रेष्ठहिं है शनिवारी प्रजामें भार चहे।।४।। संक्रान्तिहि सिंह बखानत है रविवारि तो अन्नहिं तेज करे। चन्द्रवार दुजाणो होय घणो भौमवारि वृषा नदि पूरत रे ।। बुधवारहि तृणको नाश कहूं गुरुवारि वृषा अन सूंगो भरे। शुक्र धान्य विनाश करे गौको शनिवार चहुं दिश वायु करे ।।५।। रविवारि कन्या संक्रान्ति कहुं गुरु वारिको तो फल एक हिये। शुक्रवारि होवे फल एक मिले जल वृष्टि करे बहुत देख हिये ।।सोमवारिशिशिर अन मंगलको नर शोक करे अन सुख हिये। होवें अग्निपीडा सब देशनमें बुधवारि सुंगो दूध ये रखिये ।।६।। रविवारहिं हो संक्रान्ति तुला भौमवारि को तो फल लावत हैं। देश भंग करे भय बहुत बढ़े दल टीडीको सुल्कमें आवत है।। सोमवारि करे जो सुखी हि सब बुधहिं विपरीत बतावत है। मृगुवार गुरुहि सुकाल करि शनिवारि तौ तेज चेतावत है ।।७।। रवि वृश्चिक ही संक्रान्ति रहै बहु पीडा प्रजा नित पावत हैं। सोमवार संताप बढ़ावत है अन तेज करे सो बतावत हैं ।। बुध मंगल अन्न सुकाल सुनो गुरु सूंगो रस कस चाव हैं। अन तेज करे शुक्र सूंगो रहे शनि पीडा अंगहिं छावत हैं ।।८।। रविवारहि धन संक्रांत रहे अनतेज ओ क्लेशहिं जोवत है। सोमवारि प्रजा सुख पावत है भौमवारको रोगहि होवत है ।। बुधवारि सुकालहिं रोग बढ़े गुवारि भली दुख धोवत है। शुक्रवारि सुकाल करें

अतिजोरहिं मृगदेह शनीहिको खोवत है ।। ९ ।। रविवारि मकर संक्रांत कहूं अन तेज होवे बहु लाभ सही । सोमवारे सुकाल करे अतिजोरहिं मंगल तेज करे जो कहीं ।। बुध शुक्र गुरु ये तेज करे शनिवारको किंचित काल रही । संक्रान्तिनको ये प्रमान सुनो द्विज हेतु कहे सतशास्त्र गही ।।१०।। रविवारको कुंभ संक्रान्त रहै अनतेज रु पीड़ा गावत हैं । सोमवार प्रजा सुख पावत है अनसूंगो सुकाल करावत हैं ।। भौम अग्नि बढ़े अनतेज करे बुध सूंगो हि समय बतावत हैं । गुरुवारहिं सृष्टि अकाल करे अन तेजहिं नित्य बिकावत हैं ।।११।।

दोहा—शुक्रवारको होय तो, अन्न करेगा तेज ।।
शनीवार विग्रह करे, लगे न वाको जेज ।।२।।

सवैया—रविवारको मीन संक्रान्त रहे अन तेज रु पीड प्रजामें सही । सोमवारिभि तेज बतावत है भय अग्निको मंगल होत कही ।।बुधवारको बालक पीड रहे गुरुवार सुकालतें चैन रही । भृगु अन्नही सूंग बिकावत है शनिरोग बढ़े अरु अन्न नहीं ।।२।।

दोहा—इन बारा संक्रान्तको, दीन्हों फलहि बताय ।।
महावीरके चरनमें, हेतुराम चित लाय ।।३।।

अथ ग्रहराजा बारह महीनोंके

दोहा—राजा रवि जा सम्मतको, याको यही स्वभाव ।।
हलद मेंदि दोइ चीज ये, दूणो पावे भाव ।।१।।

धान सर्व संग्रह करो, यत्नसों राखो दाब ।।
श्रावण भाद्रव बेचिये, दूणों होसी लाभ ।।२।।

राजा सोमको फल सुनो, चैत्र वैशाख खरीद ।।
संग्रह कर फिर बेचिये, दूणी पावे ऋद्ध ।।३।।

मजीठ मरचा तेल घृत, यामें दूणो होय ।।
यों फल सोमहिं समतको, निश्चय लीजो जोय ।।४।।

मंगल राजा समतको, कीजे संग्रह अन्न ।।
आश्विन मासमें बेचिये, दूणो पावे धन्न ।।५।।

मर्चा घृत गुड़ तेल अरु, लीजे खांड खरीद ।।
बलद कपास्या घोड़ला, इनमें लाभ प्रसिद्ध ।।६।।

मजीठ कागज लूणमें, निश्चय डेढ़ा होत ।।
असाड भादो मासमें, वर्षा होवे बोत ।।७।।

गुरु राजा जा समतको, संग्रह कीजे अन्न ।।
श्रावणमासमें बेचिये, दूणो पावे धन्न ।।८।।

आसोजां वृष्टी घणी, घृत मजीठको लेहि ।।
हरद तेल अजमो सही, राई भार्वहिं देहि ।।९।।

हरडे अरु मेंदी सुनो, अधिकहिं पावे भाव ।।
गुरु राजाको फल कथो, चितते मत विसराव ।।१०।।

राजा शुक्रहि समतको, बहुत खरीदो धान ।।
मास अनंतर बेचिये, दूणो लाभ प्रमाण ।।११।।

रुई तेलको आदि ले, सर्वहि संग्रह राख ।।
नफ्फो देसी चीज ये, है शास्त्रन में शाख ।।१२।।

शनि राजा जा समतमें, वाको यो संयोग ।।
धान खरीदो लाभ हो, मास सात सुख भोग ।।१३।।

बिजा बोर बण बाजरी, तेल रु घृतसे सुकाल ।।
चैत्र मास पड़सी गड़ा, मध्यदेश होय लाल ।।१४।।

अथ बारह राशिपै शनि आवे उसका फल

कुंडलिया

मेषराशि शनि आवही, पश्चिम युद्ध कराय ।।
गुर्जर सोरट और सुन, बागडा देश बिणाय ।।
बागडदेश बिणाय सुखी में कोय न रेसी ।।
समय पलट गयो जान और मृगाई व्हेसी ।।१।।
दोहा–ऐसो समयो वर्तसी, मेषराशिको जान ।।
याको यह फल नहिं टले, छत्र भंग होय जान ।।२।।
वृषभ राशि शनि जो रहे, दक्षिण विग्रा चार ।।
जल थोड़ो बेराटमें, देशहिं भंग विचार ।।३।।

कुंडलिया

मिथुनराशि शनि आवही उत्तरमें होय राड ।।
मास पांच सूंगो रहै नद नर्मदकी आड़ ।।
नदनर्मदकी आड़ उजेणी भंग जो होसी ।।
चैत्रमास दुख बहुत प्रजा धन सारा खोसी ।।४।।
दोहा–तीन मास पीडा रहै, राजाके तन जान ।।
काल रहै उत्तर दिशा, निश्चय करके मान ।।५।।
कर्कराशि शनि जो रहै, देश मेवाड़ भंग ।।
और देशको कहा कहूं, मालब होसी तंग ।।६।।
पूरब राजा आवसी, मालवदेश प्रमान ।।
नहिं वेपार भय अग्निको, और प्रजामें हान ।।७।।

कुंडलिया

सिंहराशि शनि जो रहै पृथ्वीपै होय जंग ।।
कट २ के नृपती मरे अन सूंगो नर तंग ।।

अन मूंगो नर तंग नास्ति जलकी होवे ।।
गुर्जर भागे सही चैनमें प्रजा न सोवे ।।८।।
दोहा—सिंहराशिको फल योहि, शास्त्रनको है प्रमान ।।
निश्चय करके जानियो, बहुत होवसी हान ।।९।।

कुंडलिया

कन्यापै शनि आवसी दुर्भिख उत्तर देश ।।
भाग पड़े वा देशमें नहिं सुख चैनको लेश ।।
नहिं सुख चैनको लेश वष्टि बहु होसी थोड़ी ।।
मारवाड़ और बागड़ दोनों भागे छोड़ी ।।१०।।
दोहा—कुकड देशमें नास्ति हो, पड़े सिरोही काल।।
राजा भय परजा दुखी, मासहि पाछे सुकाल ।।११।।

कुंडलिया

तुलाराशिपें शनि रहै उच्च शनिश्चर जान ।।
सर्व देश मूंगो रहे बंगालामें हान ।।
बंगालामें हान वृष्टि जलकी होय भारी ।।
बागड़में उत्पात दुखी रोवे नर नारी ।।१२।।
दोहा—राजाको दुख है सही, तुलको शनी पैचान ।।
यह निश्चय तुम जानियो, ज्योतिषको हैं प्रमान ।।१३।।

कुंडलिया

शनि वृश्चिकको आवसी सब देशनमें सुकाल ।।
मारवाड़ अरु मालवो दुख गुजरातहिं टाल ।।
दुख गुजरातहिं टाल पूर्व उत्तर सूंगाई ।।
कुकड़ तिलंगहिं देश जहां रेवे मूंगाई ।।

मास पांच लग दुःख युद्ध पीडा जो होवे ।।
मगसरमैं होय कटो राज दक्षणही खोवे ।।१४।।
धनपें शनि जो आवसी पश्चिम मूंगो अन्न ।।
पिता पुत्रको बेचसी वृष्टी थोड़ा दन्न ।।
वृष्टी थोड़ी दन्न मास नवपें युध होवे ।।
यो पश्चिमदिशा प्रमाण शनी जो सन्मुख जोवे ।।१५।।
दोहा–अन मूंगो रहे मास नव, भ्रष्ट राजकी नीत ।।
सर्व दुखी सुख है नहीं, याविध याकी रीत ।।१६।।

कुंडलिया

मकर राशि शनि जो रहै रसकसकी करे हाण ।।
मास सात पाछे मुंगो किराणो जाण ।।
मुंगो किराणो जान देख नव कोटी पीरा ।।
उत्तर खण्ड होय छत्र भंग विग्रहते अधीरा ।।१७।।
दोहा–अन्य देश सुखमें रहै, जाको बहु निर्धार ।।
याविध फल तुम जानियो, है ज्योतिषको सार ।।१८।।

कुंडलिया

कुंभराशिपें शनि रहे पश्चिम विग्रह जान ।।
महारोग रहे वाहिपे छत्रभंग होय मान ।।
छत्रभंग होय जान युद्ध रहे मास इग्यारे ।।
पूर्व दिशासं आय लड़ाई होती वारे ।।१९।।
दोहा–फेर चक्र वहां चालसी मास सात तक जान ।।
जा पीछे सुख होवसी, रत्ना होसी हान ।।२०।।

कुंडलिया

मीन राशिपें शनि रहे दक्षिण विग्रा चार ।।
सर्व देश मूंगो रहे पड़े अचेत्यो कार ।।

पड़े अचेत्यो कार मास सोला मूंगाई ।।
सर्व देश रहे दुखी ओ भुगते बहुत तवाई ।।२१।।

दोहा—लड़का लड़की बेचसी, सोला मासके मांय।।
जा पीछे सुख होवसी, हरी करेगा साय ।।२२।।

बार राशिका फलकह्या, शनीदेवके आज ।।
हेतुराम हितसो कहै, रखे बलीजी लाज ।।२३।।

अथ योगायोगग्रहफल

दोहा

सिंह मीन धन मिथुन है, कन्या वृषभ जो होय ।।
वक्रे भौम शनिश्चरा, इन राशी फल जोय ।।१।।

भू कंपे नरपति दुखी, वस्तू तेज अपार ।।
चंडि चक्र यों चालसी, पृथ्वीपें बहु भार ।।२।।

राहू मंगल और शनि, तीनों होय इक रास ।।
युद्ध मचे लोहू बहे, धान तेज जल नाश ।।३।।

आर्द्रा ऊपर आवसी, सूर्य रु मंगल जाण ।।
मास धान मूंगो करे, यो याको हे प्रमाण ।।४।।

मृगशिर भरणी दोउपें, केतु रु सूरज होय ।।
निमक धान मूंगो करे, एक मासमें जोय ।।५।।

अश्लेषामें आवसी, सूरज मंगल बुद्ध ।।
धान्य सभी सूंगो रहे, और कार्य सब शुद्ध ।।६।।

सूरज बैठे रेवती, मंगल स्वान्त जो होय ।।
राजा भय परजा दुखी, अन्नहि मूंगो जोय ।।७।।

अनुराधा शनि जो रहे, ज्येष्ठा गुरु बेसंत ।।
राजा भय परजा दुखी, पश्चिम दिशा कटंत ।।८।।
मूल शनिश्चर जाणियो, बुध स्वान्ती वर जाण ।।
मघा चंद्रमा जो रहे, धानहि तेज प्रमाण ।।९।।
सतभीषा सूरज रहै, शनी अश्विनी आय ।।
जलवृष्टी ना होवसी, प्रजा अधिक घबराय ।।१०।।
श्रवणके माही क्रूर रहे, पापग्रह संयुक्त ।।
अन्न सर्व मूंगो करै, निश्चय यो फल भुक्त ।।११।।
घनिष्ठा ऊपर आवसी, शनि मंगल सुण लेत ।।
वाहि मासके फल कहूं, जलविनाश कर देत ।।१२।।
सतभीषा घर गुरु रहे, चित्रा मंगल जाण ।।
एक मास मूंगो रहे, निश्चय करके मान ।।१३।।
सूरज मंगल शुक्र ये, बैठे शनि ग्रह मांय ।।
इन शामिल शनि जो रहे, मूंगो अन्न बिकाय ।।१४।।
राहू मंगल वृष राशि पर, देखो जो घरमाय ।।
छट्टे मासे भुगतसी, धान्यहि मूंगो बिकाय ।।१५।।
शनि राहू दोहि आवसी, मिथुन राशिपें देख ।।
पश्चिममें दुर्भिख करे, यामें मीन न मेख ।।१६।।
रवि राहू मंगल शनी, शुक्र चंद्रमा जोय ।।
एक राशि यदि छय मिले, पृथ्वी कंपित होय ।।१७।।
पूर्व दिशा पीडा अती, राजा पर बहुभार ।।
प्रजा दुखी सुख है नहीं, अधिकहि विघ्नाचार ।।१८।।
शनि सूरज बुध चन्द्रमा, राहु होय इक स्थान ।।
एक राश पर ये रहै, दक्षिणमें होय हान ।।१९।।

शनि गुरु मंगल सूर्य अरु, राहू होय इक राश ॥
होय उदंगल पृथ्वीपें, बहुजीवोंका नाश ॥२०॥

सूरज मंगल चन्द्र गुरु, सिंहराशपें होय ॥
छत्रभंग कंपे महीं, और कहा कहुं तोय ॥२१॥

मंगल सूरज शुक्र गुरु, इक राशीके चार ॥
वोहिं मास तीखो रहै, मूंगो अन्न अपार ॥२२॥

शनि सूरज अरु शुक्र ये, आवे राशी एक ॥
अन्न सर्व मूंगो रहै, विरखा ओछी देख ॥२३॥

शनि सूरज अरु राहु जो, इक राशीहिं मिलन्त ॥
जलवृष्टी ना होवसी, अनहीं मूंगो अनन्त ॥२४॥

गुरु शनि शुक्रहिं सूर्य अरु, राहू उगत प्रमान ॥
सुंगाई सब देशमें, होसी निश्चय जान ॥२५॥

सूरज मंगल शुक्र शनि, जो आवे इक राश ॥
यो फल इनको भुगतसी, बहुत प्रजाको नाश ॥२६॥

शुक्र शनी गुरु तीन वे, एक राशि बेसन्त ॥
जलवृष्टी ना होवसी, मूंगो अन्न अनंत ॥२७॥

शनि गुरु शुक्रहिं तीन ये, जो बैठे इक ठोड़ ॥
धातु वस्त्र मूंगो रहे, देश भ्रष्टको तोड़ ॥२८॥

गुरु सूरज अरु चंद्रमा, एक राशि आजात ॥
उत्तरमें भय बहु रहैं, प्रजा अधिक दुख पात ॥२९॥

जव मसूर अरु वस्त्रको, संग्रह करो अपार ॥
मास सातमें बेचियो, मिलिहैं याको सार ॥३०॥

रवि गुरु शुक्र रु चन्द्र बुध, एक राशि बैठंत ।।
नैरुतमें वृष्टी नहीं, दुखित प्रजाहि अनंत ।।३१।।
सूर्य शुक्र गुरु और शनि, मंगल जो मिल जाय ।।
ये आवें एक राशिपें, राज प्रजा दुख पाय ।।३२।।
शनि राहू मंगल मिले, एक राशिपे देख ।।
अन मूंगो राजनहि भय, रुधिर[1] बहे यो लेख ।।३३।।
शक्र भौम इक राशिपें, आवे करे सुकाल ।।
चौथे महिने बेचिये, जब तुम होवु निकाल ।।३४।।
एकराशिपें सात ग्रह,, करिहें धान्य विनाश ।।
राज प्रजा सबही दुखी, अधिक कष्टको मास ।।३५।।
आगूं तो सूरज चले, पाछे चले है राहु ।।
इन बिच बुधजब आ मिले, तब अन मूंगो बिकाह।।३६।।
शुक्र शनी इक राशिपें, बुद्ध मिले फिर आय ।।
अन मूंगो जिण मासमें, प्रजा रहत घबराय ।।३७।।

अथ बाराराशीपे ग्रहोंका योगायोगफल ।

दोहा—मेष राशि सूरज रहै, वृषभे आवे भोम ।।
अन मंगो राजा दुखी , होय प्रजाको होम ।।१।।
वृषभ राशिपें तीन ग्रह, शनी शुक्र अरु भोम ।।
अन मूंगो होय जाणिये, पाडत प्रजा है बोम ।।२।।
सूरज मंगल शुक्र शनि, मेष राशिका जान ।।
अन मूंगो राजा दुखी, प्रजा अधिक भयमान ।।३।।
शनि सूरज मंगल त्रयो, वृषभ राशि देखंत ।।
जलवृष्टी ना होवसी, भारी युद्ध मचंत ।।४।।

---

१ रुधिर = खून.

मिथुन राशपें शनि रहै, कर्कें गुरु जो होय ॥
तुलपें मंगल जो रहै, दुर्भिख होवे जोय ॥५॥
सूर्य शुक्र अरु भौम ये, हों तुलराशी मान ॥
छत्रधारि कट २ मरें, रहे सुल्कमें हान ॥६॥
चन्द्र शुक्र मंगल सही, मीनराशपें रेत ॥
जलवृष्टी ना होवसी, कोरा रेशी खेत ॥७॥
शनि राहू भेला रहै, राशी कोऊ होय ॥
अनहीं सूंगो होवसी, निश्चय लीजो जोय ॥८॥
रहे बुद्ध ग्रह चन्द्र रवि, आवे आपहि क्रूर ॥
पांच मास सूंगो रहै, जानहु अन्न जरूर ॥९॥
शुक्रके ग्रह बुध चन्द्र होय, चन्द्रसदन शनिराय ॥
थोड़ी वृष्टी होवसी, अनही मूंगो थाय ॥१०॥
सूर्यसदन राहू बसे, पशको होय विनाश ॥
क्रूर मास वो जानियो, बहुत दिखावे त्रास ॥११॥
बुध घरमें रवि चन्द्रमा, आवें निश्चय मान ॥
वोई मास तीखो रहै, मूंगा साती धान ॥१२॥
शुक्र सदन मंगल गुरू, जानहुं तीखो मास ॥
निपज अल्प होय खेतमें, मूंगो बिके कपास ॥१३॥
मंगलघर शनि राहु होय, लाल वस्तु होय तेज ॥
वोहि वर्ष मूंगो रहे, करे न कबहू जेज ॥१४॥
गुरुघरमें शनि राहु होय, तृणको होय विनाश ॥
विरखा तो होवे नहीं, पशुअनको होय नाश ॥१५॥
चन्द्र सूर्य शनि राहु गृह, आवें फल यह मान ॥
मूंगो अन गुड़ तेज अरु, पशुअनको सुख जान ॥१६॥
मंगलके गृह शुक्र होय, अनही अन्न करंत ॥
शनिगृह शुक्ररु चन्द्रमा, मूंगो तुवर अनन्त ॥१७॥

गुरुघरमें बुध शुक्र होय, प्रजामें आवे पीड़ ।।
कहूं पंथकी शाखसो, कोय न आवे भीड़ ।।१८।।

अथ ग्रहवक्रे फल

दोहा

गुरुघरमें शनि वक्र होय, गहुं तिलतेल सुकाल ।।
तेज रहहिं नव मास पर, संग्रह कर लो माल ।।१।।
एक राशि गुरु शुक्र रहे, प्रजा दुखी अन तेज ।।
निश्चय कर तुम जानियो, यामें लगे न जेज ।।२।।
अतीचार होय शुभहि ग्रह, नरपति नाश करन्त ।।
धान्य सर्व मूंगो रहे, दुखि हो प्रजा अनंत ।।३।।
अतीचार हैं पापग्रह, राजापें बहुभार ।।
द्रव्यनाश वृद्धी अधिक, प्रजा सुखी संसार ।।४।।
अतीचार शुनि होत हैं, वक्रे मंगल जान ।।
दुखी रहे राजा प्रजा, धान्य तेज होय मान ।।५।।
शुभग्रहहीं अतिचार हैं, वक्रे ग्रह हैं क्रूर ।।
अन्नहि मूंगो जानियो, राजन युद्ध जरूर ।।६।।
शनि मंगल दोइ वक्रसी, याको फल यो केत ।।
चक्रचंडिके चालसी, अन मूंगो कर देत ।।७।।
चैत्र अंधारी पंचमी, जो बुधवारी होय ।।
मंगल जा दिन वक्रसी, रसकस मूंगो जोय ।।८।।

अथ शनी उदय होवे ताको फल

दोहा—आश्विनकार्तिक मासमें, उदय देव शनि होय ।।
नद्दी नाला सूखसी, वृष्टी थोड़ी जोय ।।१।।

कुंडलिया

भरणीसों गिन लीजिये आठ नक्षत्रहिं माय ।।
यामें उदय हो शुक्र जो मेघहि द्वारमें जाय ।।

मेघहिं द्वारमें जाय मेघकी वृष्टी लावे ।।
प्रजा होय सब सुखी नृपति सारे सुख पावे ।।२।।
दोहा—अन निपजे जादा सही, बहोत होत हैं साल ।।
मेघ द्वारको योहि फल, सब जन रेत खुशाल ।।३।।

कुंडलिया ।

मघा नक्षत्रहिं आदि ले पांच नक्षत्रहि जाण ।।
यामें शुक्र जो उदय हो धूल द्वार परमाण ।।
धूल द्वार परमाण वृष्टिजलकी नहिं होवे ।।
चले पवन अति जोर वृष्टि न सारी खोवे ।।४।।
दोहा—किंचित छीटे होत है सुनो सबी नर नार ।।
धूल द्वारको फल यही, चातुर करो विचार ।।५।।

कुंडलिया ।

स्वाति नक्षत्रको आदिले सात नक्षत्रहिं जोड़ ।।
यामें शुक्र जो उदय हो राजद्वार सिर मोड़ ।।
राजद्वार सिर मोड़ राजमें युद्ध मचावे ।।
छत्रभंग कइ होय कतल कैयक हो जावे ।।६।।
दोहा—दुनियामें दुख होवसी, याको योहि प्रमाण ।।
उदय होय नृपद्वारमें, या विद होवे हान ।।७।।

कुंडलिया

श्रवणहिते गिन लीजिये अश्वनितक गिन लेत ।।
यामें शुक्र जो उदय हो कनकद्वारही केत ।।
कनकद्वारही केत याहिके फल चित दीजे ।।
सर्व सुकालहिं होय मेघवृष्टि अति लीजे ।।८।।
दोहा—अन्न बहुत निपजे सही, प्रजा करे सुख चैन ।।
कनकद्वारही जानियो, यो आवे सुख दैन ।।९।।

अथ बारामासमें शुक्र उदय हो वाको फल

दोहा

फालगनमें भृग उदय हो, पवन घणो अतिजोर ।।
मास चैत्रमें उदय हो, फूले सब वन सोर ।।१।।
जो ऊगे वैशाखमें, चले खड्ग बढ़े बेर ।।
शुक्र उदय हो ज्येष्ठमें, जलवृष्टि नहिं फेर ।।२।।
शुक्र असाढ़ जो उदय हो, वृष्टी थोड़ी होय ।।
ऊगे श्रावण मासमें, दुष्कालहिं लो जोय ।।३।।
भलो भादवे ऊगसी, सर्व वस्तु सो काल ।।
आसोजामें जो उगे, थोड़े नियजे माल ।।४।।
कार्तिक मृगसिर दोनमें, उदय शुक्र जंजाल ।।
मुल्क दुखी सुख है नहीं, पड़े अचेत्यो काल ।।५।।
शुक्रउदय हो पौषमें, राजछत्र होय भंग ।।
माघमासमें उदय हो, होसी अन्न अथंग ।।६।।
पड़वा छट्ठ एकादशी, जो शुक्रहिं ऊगंत ।।
अन मूंगो वृष्टी घणी, केलहिं प्रजा करन्त ।।७।।
बीज सप्तमी द्वादशी, जो शुक्रहिं ऊगंत ।।
खप्र भरावे योगिनी, स्वर्गलोक पूगंत ।।८।।
तीज त्रयोदशि अष्टमी, जो शुक्रहिं ऊगंत ।।
नग्नहिं निश्चय धूजसी, भूप दही भाजंत ।।९।।
चवदश नवमी चौथको, जो शुक्रहि ऊगंत ।।
चौपद पीड़ा नर दुखी, अधिक होत है तंग ।।१०।।
पांचम दशमी पूर्णिमा, शुक्रहिं जो ऊगंत ।।
धरा सुखी भूपति सुखी, केलहि प्रजा करंत ।।११।।

बारा मासमें शुक्र अस्त हो वाको फल

दोहा

फालगुनमें भृगु अस्त होय, काल पड़े छय मास ।।
शुक्र अस्त हो चैत्रमें, राजा सुखी निवास ।।१।।
अस्त होय वैशाखमें, पशु पीड़ा होय बोत ।।
ज्येष्ठ मासमें अस्त होय, वृष्टी खूबहिं होत ।।२।।
असाढ़में जो अस्त होय, जलवृष्टीको नाश ।।
श्रावणमें जो अस्त होय तो, नहीं धान्यकी आस ।।३।।
अस्त भाद्रपद होय तो, मेघ घणो बरसन्त ।।
असोजामें अस्त होय, दुनिया सुखी रहंत ।।४।।
कार्तिकमें जो अस्त होय, वृष्टी बहुत विचार ।।
मृगसिरमें जो अस्त होय, विग्रह होय अपार ।।५।।
उदय अस्त ये शुक्रके, फलही कहे विचार ।।
कृपा बलीकी हेतुपै, लियो ग्रंथको सार ।।६।।

अथ सींगी, पूछड़ी, चोटीवारा ताराऊ गे जणांको फल

रविघर राहु सोम घर शुक्कर, शनि मंगल होवेगा वक्कर ।।
एक मासमें आवे एता, जब ऊगेगा धूम्रहिकेता ।।१।।
उत्तर दिशासों टूटे तारो, लांबी पूछड़ि हे छंद गारो ।।
दशो दिशामें पड़े दुकाल, चले चक्र चंडीको हाल ।।२।।
पूर्वदिशासों तारो टूटे, माहों माही राजा फूटे ।।
पूर्वदिशामें बहे जो खून, इण ताराकी याहे धूम ।।३।।
चोटीवारो ऊगे ऋणो, छत्रभंग होवे पहचाणो ।।
तीखो रेसी अन्न अपार, प्रजा दुखी सारो संसार ।।४।।
ऊगे तारो पूछड़िवारो, चौपद पीड़ा करे सो धारो ।।
धरती कंपे पड़े दुकाल, इण ताराको ऐसो ख्याल ।।५।।

दक्षिण ऊगे सींगी तारो, टूटे मरगी पड़े विचारो ।।
चौपद विनाश होता बोत, दक्षिण पश्चिम मूंगो होत।।६।।
प्रथम प्रहरमें धनकी हान, द्वितीय प्रहरमें रोगहि जाण ।।
तीजे प्रहर प्रजा हे सूखी, चौथे परे चौपद दुःखी ।।७।।
धरती कंपे मूंगो अन्न, राजा होम करो जादन्न ।।
तो सबको सुख होय अपार, सींगीताराको विस्तार ।।८।।
अब ताराको बार प्रमाण, कहूं सो निश्चय लीजो मान ।।
रविवारे तो रोगहि करे, सोमवारको शुभ फल धरे ।।९।।
भौमको टूटे करे विनाश, बुधवारे मरगीकी आस ।।
गुरुवारको प्रजामें हाण, शुक्रवारको युद्धपेचाण ।।१०।।
शनीवारको छत्रहि भंग, टूटे तारो होसी जंग ।।
तारा को सब यो व्रतमान, तारो करे बहुत सी हान ।।११।।
एकम बीज तीज अरु चौथ, पांचम तारो सुखदे बोत ।।
छट सातम आठमको विचार, नवमी दशमी छत्रभंग गतार।।१२।।
ग्यारस बारस तेरस सही, चौदश पूनम तिथिमें कही ।।
इणहि तिथ्यांमें टूटे तारो, पड़े काल नेचे कर धारो ।।१३।।
नक्षत्रहिको कहूं विचार, तारो टूटे जा सुम्मार ।।
अश्वनि आगु नखत्तर सात, टूटे युद्ध मचे दिन रात ।।१४।।
पुषसो आठ नखत्तर आन, धरती कंपे मरे राजान ।।
श्रवणसो सात नक्षत्रमें टूटे, धरती कंपे अन्नहि खूटे ।।१५।।
श्रवणसो छय नखत्तर ताही करे रोग चारों बहुवाही ।।
सुन ताराको कयो हैं भेद, तारो देत बहुतसो खेद ।।१६।।
दोहा—कृपा बलीकी पूर्ण है, हेतुरामपें जान ।।
ताराको फल कथकयो, यामें झूठ न मान ।।१७।।

अथ वायुप्रमाण

दोहा—चैत्र सुदी जो पंचमी, वाजे पूरब वाय ।।
बालक पीड़ा बहु करे, सूंगो अन्न बिकाय ।।१।।

ज्येष्ठ मास सुद पंचमी, दक्षिण वायु बजन्त ।।
भाद्रहिपद वृष्टी अधिक, मूंगो तेल अनंत ।।२।।
असाढ़ सुदी पंचमी, पश्चिम वायु जो होय ।।
रस कस मूंगा जानियो, कार्तिक मूंगा जोय ।।३।।
श्रावण शुक्ला पंचमी, मेघ गर्जना होय ।।
पश्चिम दक्षिण जानियो, धान्य अधिक भय जोय ।।४।।
चित्रा स्वाति विशाखा, श्रावणमें वर्षन्त ।।
अन्न सभी संग्रह करो, मूंगो होय अनंत ।।५।।
चित्रा स्वाति विशाखा, वो ज्येष्ठहि मास ।।
वृष्टी थोड़ी होवसी, होय प्रजाको नाश ।।६।।
असाढ़ पूनम वायरो, नैर्ऋतु कोणमें जोय ।।
पानी ढूंढ़ो ना मिले, अन्न तेजही होय ।।७।।
असाढ़ पूनम बाजसी, वायुकोणमें वाय ।।
मूषा टीडींहि लागसी, धान सभी खा जाय ।।८।।
आसाढ़ पूनम वायरो, उतर दिशामें होय ।।
निपजे दूणो चौगुणो, अन्न सुकलहिं जोय ।।९।।
असाढ़ पूनम वायरो, इशान, कुणमें होत ।।
प्रजा सुखी सूंगो घणो, अन्नहिं निपजो बोत ।।१०।।
अग्नि कोणको वायरो, अग्नीको भय देत ।।
पश्चिम वाजे वायरो, जल विन सूखे खेत ।।११।।
दक्षिण वाजे वायरो, पड़े दखनमें काल ।।
पूरव वाजे वायरो, अल्पहिं वृष्टि संभाल ।।१२।।

अथ बारह राशी पर नवी ग्रह उदय होवे वा माहोंमांहीं बैठे जिणाकोफल

छंद छप्पय

शुक्रके घरमें सुना मंगल जो आवे ।।
छय महिना रहे तेजके मूंगो अन्न बिकावे ।।

शनिके घरमें राहु राहुघर शनी जो बैठे ।।
करे अन्न को नाश राजमें होय बखेठे ।।
बुधघरमें चन्द्रमा करत है प्रजा विरोध ।।
यह फल इनको जानियो निश्चय करके शोध ।।१।।
शुक्रके घरमें चन्द्र बुध जो आवे जानो ।।
चन्द्रके घरमें शुक्र राहु आवे पेचानो ।।
थोड़ी वृष्टी होय धान सूंगो सुण लीजे ।।
रविघर राहू होय पशुनमें पीड़ा कीजे ।।
बुधघरमें शनि चन्द्र होय मूंगा साती धान ।।
यो इनको फल जानियो पंडित करो प्रमान ।।२।।
शनिघरमें बुध राहु बैठे जाको फल योंही ।।
चौपदको होय नाश सुखी रहे जन सगरोंही ।।
मंगल घरमें शुक्र चन्द्र बैठे तब जानो ।।
पशुको पीडा होय अधिक यह फल पहिचानो ।।
मूंगी वस्तु होय सकल जानहु जो अपारा ।।
याविध याको फल्ल सुनो ज्योतिषमें सारा ।।३।।
मंगलके घर शुक्र बैठे जाको फल केता ।
अन्न हो जावे तेज सभी को सुणाय देता ।

दोहा

शनिघरमें सूरज पड़े, कपड़ो करे है तेज ।।
याको फल यो जानियो, रती न लागे जेज ।।१।।
छंद —गुरुघरमें होय शुक्र भौम तो पीडा लावे ।।
ग्रह राशी एकत्र होय तो फलहिं बतावे ।।
मित्रहि फल है सही याहीको वो चित चावे ।।
यो याको है प्रमाण सभी यो शास्त्र सुनावे ।।२।।

दोहा—यो मित्रनके फल कहे, शास्त्रनके आधार ।।
सब गुणि जब तुम चित्तसे, रखिये कृपा अपार ।।३।।
सूर्य चन्द्र और शुक्र ये, तीनोंही मिल जात ।।
ये तीनों भेला रहे, विरखा होय अगात ।।४।।
उन्नालामें जो मिले वृषा होय बहु भार ।।
जा दिन तीनी आ मिले, इणकी बात विचार ।।५।।

अथ स्त्रीपुरुष नक्षत्रोंका विचार

दोहा ।

आर्द्रा आगू दश नखत, ताको कहूं विचार ।।
इनको नारी जानियो, ग्रंथनके आधार ।।१।।
वैशाखासों जानियो, हैं नपुंसक तीन ।।
मूलसे दश आगू सुनो, पुरुष बड़े परवीन ।।२।।
भरणी आगू चार जो, हे तपसी यह जान ।।
करि विचार मनमेंहि तुम, गिन लो चतुर सुजान ।।३।।

अथ जलयोगके सूर्य नक्षत्र

दोहा

चित्रा स्वाति रु हस्त पुन, अनुराधा परमान ।।
मूल विशाखा फाल्गुनी, पूर्वा उतरा जान ।।१।।
रोहनि मृगशिर शतभिषा, ज्येष्ठा भाद्रपद आन।।
इते नखत्तर सूर्यके, जानो चतुर निदान ।।२।।
अश्वनि भरणी कृत्तिका, आर्द्रा पुनर्वसु पुख आद।।
अश्लेषा मघा पुर्वासाढ़ा, उत्तरासाढ़ा वाद ।।३।।
श्रवण घनिष्ठा उत्तरा, भाद्रपद रेवति साद ।।
इते नखत्तर चन्द्रके, और रहे सो बाद ।।४।।
सूर्य नक्षत्रहिं जो होवे, वायू चले विशेष ।।
चन्द्र नक्षत्रहि जो मिले, शीतल सारो देश ।।५।।

चन्द्र सूर्य के नखत्तर, दोनों भेरे होय ।।
जल वर्षे अतिजोरसों, यातु भली जो जोय ।।६।।
हस्त अगाड़ी नखत्तर, जो आवे हैं तीन ।।
मूल और पूर्वा तिनी, रेवति भरणी दीन ।।७।।
उत्रा तीनी जाणकै, राखो सभी यकीन ।।
फल जोगके नखत्तर, समझो भिन्नहिं भिन्न ।।८।।

अथ नक्षत्रवाहन जलयोगका

दोहा

तप्त नखत्तरसे गिनो, दीन नखत तक जाय ।।
नवको भाग जो दीजिये, बचे सो वाहन ठाय ।।१।।
एक बदे तो अश्व हैं, दोय वदे तो शियार ।।
तीन वदे मींडक सही, मीडा वदे जब चार ।।२।।
पांचम मोर प्रमा निये, छट्टा ऊंदर जान ।।
सात वदे भैंसो रहे, बन्दर आठ प्रमान ।।३।।
नवमो नाग प्रमानिये, ये वाहन तुम जान ।।
वर्षा ऋतूमें देखिये, अब फल कहूं प्रमान ।।४।।
भैंसा मींडक वाहनहीं, वृष्टी करत अपार ।।
अत्यहिं वृष्टी करत हैं, बन्दर और वन जार ।।५।।
गजकी वृष्टी परबते, होवत हैं भरपूर ।।
मीडा मूषकः श्याल ये, सब वृष्टी है मूर ।।६।।
नाग अश्वकी वृष्टि है, थोड़ी करो विचार ।।
ये वाहन जल योगके, कहे सो चित्तमें धार ।।७।।

अथ अधिकमास आवे जिणरो फल

दोहा—कार्तिक होसी दोय तो, सूंगो रैवे अन्न ।।
सुखी रहे परजा सभी, अधिक कमावे धन्न ।।१।।
मगशिर होवे दोय तो, ब्राह्मण माथे भार ।।
दुख पावे ब्राह्मण सभी, मिले न कोउ रुजगार ।।२।।

पौष दोय जा वर्षमें, होय प्रजाने दुःख ।।
पीछे बारा मासके, सबको होसी सुख ।।३।।
माघ दोय जा बरसमें, अग्नी चारी बोत ।।
ऐसो समयो बरतसी, तीखो, अन्नहि होत ।।४।।
दो फाल्गुन जा वरसमें, क्षत्री माघे भार ।।
कोइ खंडके मायने, राजा जावे हार ।।५।।
दोय चैत्रको फल कहूं, घणी मुंगाई थाय ।।
कोई खंड खाली रहे, मुक्त तबा हो जाय ।।६।।
दो वैशाख जा वर्षमें, श्रेष्ठ समय्यो जान ।।
सर्व चीज सस्ती मिले, घर बैठे दे आन ।।७।।
दोय ज्येष्ठको फल सुनो, होवे घणो विनाश ।।
राजा माथे भार रहे, नहिं जीवाकी आश ।।८।।
दो असाढ़ जा बरसमें, निपजे थोड़ो अन्न ।।
जल वृष्टी ना होवसी, खाय खुटावो धन्न ।।९।।
दो श्रावण जा वरसमें, अनहीं मूंगो बिकंत ।।
सब पृथ्वीपे तेज रहे, कहा करे बलवन्त ।।१०।।
जब आवे दोय भाद्रवा, संगो बिकसी धान ।।
सुखी देश सारो रहे, निश्चय करके जान ।।११।।
दो आसोज जा बरसमें, भय दुनियाको होत ।।
रात्र दिवस जगते रहो, चोरी होसी बोत ।।१२।।

अथ ग्रहयोगायोग

दोहा

गुरु बुध चंद्र इक राशिपे, तो जल वृष्टी होय ।।
जल वृष्टी जादा सही, निश्चय लीजो जोय ।।१।।
शुक्र बुद्ध दोनों सही, इक राशीपर होय ।।
जलयोग बरसातमें, निश्चय लीजो जोय ।।२।।
पाछे मंगल रवी रथ, जो असाढ़में होय ।।
जल बर्से अति जोरसो, निश्चय लीजो जोय ।।३।।

मीन शनिश्चर कर्क गुरु, जो तुल मंगल होय ।।
रोग बढ़े शत्रू सही, दुख उपजे ये दोय ।।४।।
गुरु सूरज मंगल मिले, एक राशिमें आत ।।
घरपे काल खड़ो रयो, नारी दुख अति पात ।।५।।

चौपाई

सिंह शुक्र जल पूरण दीसे, कर्क बृहस्पति सागर सूसे ।।
जो तुल मंगल कहूं ये वाणी, भीजे धूलन बरसे पाणी ।।६।।

दोहा

पांचहि ग्रह शुभ अशुभ ये, इक राशी बैठन्त ।।
यो फल इनको कहत हों, जल थल घन बरसन्त ।।७।।

चौपाई ।

अश्लेषा अरु चित्रा साय, कृतिका भरणि अमावस आय ।।
एक नखत्र सों तिथि हे ऊगी, धान होवसी मंगो ऊगी ।।८।।
मूल मघाने रोहणी रेवे, पुष्प पुनर्वसु जो शनि सेवे ।।
हलचल मचे सुणो चौखंडे, धूजे धरती सब नव खंडे ।।९।।
चौपद मरे लोग संतावे, इण नखत्रसों शनि जो आवे ।।१०।।

अथ वर्षप्रमाण

दोहा—विरखा बिस्वा टीपणे, करो चौगुणा अंक ।।
पांचहिं पीछे निकालिये, सातहि भाग निशंक ।।१।।
उग्रे आदा कीजये, जिनको अर्द्ध प्रमान ।।
यो इनको फल देखिये, कातिक मासमें जान ।।२।।

संवत्सरप्रमाण

चौपाई

एक छमच्छर दूणा कीजे, तिनमेंसेहीं तीन लेलीजे ।।
विनमें नवको भागहिं दीजे, बाकी उबरे सो फल कीजे ।।१।।
एक छय पूरन मध्यम काल, पांच सात अरु अष्ट दुकाल ।।
कहू छमच्छरका ये हाल, महावीर शत्रुनके शाल ।।२।।

अथ दूजा संवत्सरको बिचार

चौपाई

आद छमच्छर त्रिगुणा कीजे, जामें एक पांच घर दीजे ।।
सात सातको भागहिं कीजे, शेष बचे सो फल गिण लीजे ।।१।।
दोय बचे तो होय सुकार, तीन बचे तो मेह अपार ।।
एक चार यदि बचे विचार, तो जाणीजे मध्यम कार ।।२।।
पंच अंकमें बाजे वाय, छट्टे मेह अगातो थाय ।।
सातो शून्य कहूं समझाय, पड़े काल नेहचे भुगताय ।।३।।

अथ धनुषको विचार

दोहा

चन्द्र शुक्र गुरु भौम रवि, तणे धनुष इस वार ।।
दिन चौथे कहुं पांचमें, वर्षे मूषल धार ।।१।।
सूर्योदयके समयमें, पश्चिम धनुष तनन्त ।।
चौथे पांचमें प्रहरमें, वर्षे नीर अनंत ।।२।।

अथ ग्रह ऊंचनीचप्रमाण

दोहा

श्रेष्ठहिं सूरज उच्चको, मेष राशिको होय ।।
को सूरज नीचको, निश्चय लीजो जोय ।।१।।
वृषभ रासको होय तो, उच्च चन्द्रमा जाण ।।
वृश्चिक चन्द्र जो होय तो, नीच रासि परमाण ।।२।।
मंगल आवे मकरको, उच्च सदा लो जोय ।।
कर्क मंगल नीचको, यह प्रमाण सो होय ।।३।।
कन्याको बुध उच्च है, उच्च सदा अति जोर ।।
मीनराशिको नीच है, मानो बातहिं मोर ।।४।।

कर्कै गुरु पधारिया, उच्च राशि बैठन्त ।।
गुरु मकर पर जावसी, पंडित सब जानन्त ।।५।।
मीन राशिको उच्च है, शुक्रहि राज अनूप ।।
कन्या राशिको नीच है, शुक्र समझ लो भूप ।।६।।
तुला राशीको होय तो, उच्च शनिश्चर देव ।।
मेषराशि यो नीच है, करो सकल मिल सेव ।।७।।
राहू होवे मिथुनको, उच्च राशि फल जोय ।।
धनुराशिको नीच है, पंडित लीजो जोय ।।८।।
उच्च राशि ग्रह होय तो, करत है सभी सुकाल ।।
नीच राशि ग्रह होय तो, होसी मूंगा माल ।।९।।

सोरठा

कीजे सर्व आनंद, महारुती वायूतनया ।।
काटो भवके फन्द, हाथ जोड़ विनती करों ।।१।।

दोहा

योगायोगके ग्रंथको, कियो कृपा तव पाय ।।
सब पाठक पर हूजियो, प्रति दिन आप सहाय ।।१।।

इयं संवत्सरफलदीपिका मालवान्तर्गतरत्नललामनगरनिवासिना व्यासकेवलरामात्मजहेतुरामश्रीमालिना विरचिता समाप्ता ।

हमारी सभी पुस्तकें मिलने के स्थान–

१. खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, सातवीं खेतवाड़ी, खम्बाटा लेन, बम्बई–४००००४.
२. गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस व बुकडिपो, अहिल्याबाई चौक, कल्याण जि. ठाणे (महाराष्ट्र)
३. खेमराज श्रीकृष्णदास चौक, वाराणसी (उ. प्र.)